मरूमेघ
किसान ई पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाईन उपलब्ध

ISSN : 2456-2904
© marumegh 2022
आलेख प्राप्ति : 30-03-2022
स्वीकरण : 10-04-2022

कार्बनिक खेती का भूमि, जलवायु और मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव

भवानी सिंह प्रजापत व एम. के कौशिक
सस्य विज्ञान विभाग, राजस्थान कृषि महाविद्यालय, उदयपुर (राज.)
*ई–मेलः– bspagro1992@gmail.com

जैविक खेती कृषि की वह विधि है जो संश्लेषित उर्वरकों एंव संश्लेषित कीटनाशकों के अप्रयोग पर आधारित है तथा जो भूमि की उर्वरा शक्ति को बचाये रखने के लिए फसल चक्र, हरी खाद, कम्पोस्ट आदि का प्रयोग करती है। संपूर्ण विश्व में बढ़ती हुई जनसंख्या एक गंभीर समस्या हैं, बढ़ती हुई जनसंख्या के साथ भोजन की आपूर्ति के लिए मानव द्वारा खाद्य उत्पादन की होड़ में अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए तरह–तरह की रासायनिक खादों जहरीले कीटनाशकों का उपयोग, प्रकृति के जैविक और अजैविक पदार्थो के बीच आदान–प्रदान के चक्र को (इकालाजी सिस्टम) प्रभावित करता हैं, जिससे भूमि की उर्वरा शक्ति खराब हो जाती हैं, साथ ही वातावरण प्रदूषित होता है तथा मनुष्य के स्वास्थ्य में गिरावट आती है। कृषि की चुनौतियों से निपटने के लिये जैविक खाद का इस्तेमाल आज की सबसे बड़ी आवश्यकता हैं। इस तरह की खेती के प्रारम्भिक चरणों में आर्थिक लाभ कम होने से किसान जैविक खेती के तौर–तरीके अपनाने से बचते हैं। लेकिन यह इस तरह की खेती के फायदों के बारे में किसानों की जानकारी की कमी दर्शाता हैं। सरकारी एजेंसियों और योजनाओं में इस कमी को दूर करने का प्रयास किया जाना चाहिए। इसके लिये कृषक समुदाय को जैविक खेती की तकनीकों के बारे में मिसाल देकर जानकारी दी जानी चाहिए जिससे वे पारम्परिक खेती के वैकल्पिक तरीकों के बारे में विशेषज्ञता हासिल कर सकें।

जैविक प्रणाली में सभी घटकों के सही मात्रा में उपयोग करते हुए अधिकतम लाभ प्राप्त करने के लिये अच्छ प्रबन्धकीय कौशल की आवश्यकता होती हैं। इसलिए खेती के प्रबन्धकों यानी किसानों को संसाधनों को उचित मात्रा में लगातार उपयोग सुनिश्चित करने के लिये प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। भारत में जैविक खेती की अपार सम्भावनाएँ हैं इसलिये खेती की जैविक विधियों के प्रमाणन के लिये और अधिक अनुसन्धान की आवश्यकता है।

प्राचीन काल मे मानव स्वास्थ्य के अनुकुल तथा प्राकृतिक वातावरण के अनुरूप खेती की जाती थी, जिससे जैविक और अजैविक पदार्थो के बीच आदान–प्रदान का चक्र निरन्तर चलता रहा था, जिसके फलस्वरूप जल, भूमि, वायु तथा वातावरण प्रदूषित नहीं होता था। परन्तु बदलते परिवेश में गोपालन धीरे–धीरे कम हो गया तथा कृषि में तरह–तरह की रसायनिक खादों व कीटनाशकों का प्रयोग हो रहा है जिसके फलस्वरूप जैविक और अजैविक पदार्थो के चक्र का संतुलन बिगड़ता जा रहा है और वातावरण प्रदूषित होकर, मानव जाति के स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहा है। अब हम रसायनिक खादों, जहरीले कीटनाशकों के उपयोग के स्थान पर, जैविक खादों एंव दवाईयों का उपयोग कर, अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं जिससे भूमि, जल एंव वातावरण शुद्ध रहेगा और मनुष्य एंव प्रत्येक जीवधारी स्वस्थ रहेंगे।

➢ जैविक खेती द्वारा मिट्टी में होने वाले सुधार :'–

मिट्टी की गुणवत्ता नीव है जिस पर खेती खड़ी होती है! खेती के तरीको से कोशिश है कि मिट्टी की उर्वरता का निर्माण और रखरखाव बना रहे! इसके लिए एकाधिक फसले उगाना, फसलो का परिक्रमण, जैविक खाद और कीटनाशक और न्यूनतम जुताई आदि तरीके है! मिट्टी मे मूल जैविक तत्व प्राकृतिक पौधों के पोष्टिक तत्वों से बना हैं, जो की हरी खाद, पशु का खाद, काम्पोस्ट और पौधो के अवशेष से बना हैं, ऐसी

सूचना है की मिट्टी में जैविक खेती के दौरान कम घनत्व, उच्च जल धारण क्षमता, उच्च माइक्रोबिल और उच्च मिट्टी श्वसन गतिविधिया होती हैं

- ✓ भूमि की उपजाऊ क्षमता में वृद्धि हो जाती हैं।
- ✓ सिंचाई अंतराल में वृद्धि होती हैं
- ✓ फसलों की उत्पादकता में वृद्धि
- ✓ हानिकारक जीवों को नियंत्रित करना।
- ✓ जैविक खाद के उपयोग करने से भूमि की गुणवत्ता में सुधार आता है।
- ✓ भूमि की जल धारण क्षमता बढ़ती हैं।
- ✓ भूमि से पानी का वाष्पीकरण कम होगा।
- ✓ मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार : जैविक खेती मिट्टी को अपनी उर्वरता हासिल करने में मदद करती हैं, क्योंकि इस तरह की खेती मिट्टी में विभिन्न आवश्यक पोषक तत्वों की आपूर्ति करती हैं और इसके अलावा यह मिट्टी को अपने पोषक तत्वों को बनाए रखने में भी सहायता करती हैं।
- ✓ जैविक खेती में मिट्टी की उर्वरक क्षमता को बढ़ाने के लिए प्राकृतिक पोषक तत्वों के माध्यम से मिट्टी का रीचार्जीकरण किया जाता है। इस उद्देश्य के लिए, आवश्यक पोषक तत्वों के साथ मिट्टी को रीचार्ज करने के लिए पशु अपशिष्टों का उपयोग किया जाता है। पशु अपशिष्ट में मौजूद बैक्टीरिया एक बार फिर मिट्टी को उपजाऊ बना देते हैं।
- ✓ जैविक खेती के पॉलीकल्चर विधि द्वारा मिट्टी के सूक्ष्मजीवों को और अधिक उपजाऊ बनाने में सहायता मिलती है।
- ✓ फसल परिक्रमण इस तरह की खेती के मुख्य घटकों में से एक हैं। जैविक खेती के फसल परिक्रमण द्वारा मिट्टी को स्वस्थ एंव उर्वरक बनाए रखने का अत्यधिक प्रयास किया जाता है।

➢ **जैविक खेती द्वारा मनुष्य स्वस्थ में होने वाले सुधार :–**

- ✓ उत्पन्न खाद्यान्न में उचित मात्रा में सभी पोषकतत्व उपलब्ध होते हैं स्वस्थ भोजन प्राप्त होता है।

- ✓ विषयुकत भोजन एंव उनसे होने वाले असाध्य बीमारियों एंव रोगों से मुक्ति मिलती है।
- ✓ शरीर की प्रतिरोधी क्षमता का विकास होता है हम स्वस्थ और रोगों से मुक्त रहते हैं।
- ✓ मिट्टी, खाद्य पदार्थ और जमीन में पानी के माध्यम से होने वाले प्रदूषण में कमी आती है।

- ✓ कचरे का उपयोग, खाद बनाने में, होने से बीमारियों में कमी आती है।
- ✓ स्वस्थ सुखी समृद्ध एंव स्वावलंबी भारत का निर्माण संभव है।

➢ **जैविक खेती द्वारा पर्यावरण में होने वाले सुधार :–**

- ✓ प्रकृति एंव पर्यावरण से संतुलन बनाकर अच्छा और अधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।
- ✓ जैविक खेती के माध्यम से पर्यावरण शुद्ध रहता है और कम प्रदूषित होता है
- ✓ भूमि के जल स्तर में वृद्धि होती है।
- ✓ ग्लोबल वार्मिग के प्रभाव को कम किया जा सकता है।

जैविक खेती का महत्व

जैविक खेती प्राकृतिक आवास को बनाए रखने का एक महत्वपूर्ण तरीका है। जैविक खेती के माध्यम से पर्यावरण शुद्ध रहता है और कम प्रदूषित होता हैं तथा यह ग्रह पर जीवन को बनाए रखने में भी मदद करता हैं। इसके अलावा, जैविक खेती के लोगों को स्वस्थ भोजन प्रदान करने के लिए भी आयात किया जाता हैं। जब लोग जैविक प्रक्रिया से उत्पादित शुद्धतम एंव स्वस्थ भोजन को ग्रहण करते हैं तो वे अनेक प्रकार के घातक बीमारियों से दूर रहते हैं। इसके अलावा जैविक खेती में उपयोग किए जाने वाले प्राकृतिक खादों की वजह से मिट्टी को स्वस्थ एंव उर्वरक बनाए रखने का अत्यधिक प्रयास किया जाता है। आधुनिक समय में निरन्तर बढ़ती हुई जनसंख्या, पर्यावरण प्रदूषण भूमि की उर्वरा शक्ति का संरक्षण एंव मानव स्वास्थ्य के लिए जैविक खेती की राह अत्यन्त लाभदायक है। मानव जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए नितान्त आवश्यक है कि प्राकृतिक संसाधन प्रदूषित न हों, शुद्ध वातावरण रहें एंव पोष्टिक आहार मिलता रहें, इसके लिये हमें जैविक खेती की कृषि पद्धतियाँ को अपनाना होगा जो कि हमारे प्राकृतिक संसाधनों एंव मानवीय पर्यावरण को प्रदूषित किये बगैर समस्त जनमानस को खाद्य सामग्री उपलब्ध करा सकेगी तथा हमें खुशहाल जीने की राह दिखा सकेगी।

****